● सुनो, समझो और पढ़ो :

७. रहस्य

-डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

जन्म : १९४०, नागोद (म.प्र.) **मृत्यु :** १४ नवंबर २०१३ **रचनाएँ :** संपूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ आदि । **परिचय :** डॉ. हरिकृष्ण देवसरे जी ने बालसाहित्य रचना और समीक्षा के क्षेत्र में प्रशंसनीय योगदान दिया है । आपने अनेक पुस्तकों का संपादन कार्य भी किया है ।
प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने बच्चों को अंधविश्वासों से दूर रहते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रेरित किया है ।

स्वयं अध्ययन

हिंदी-मराठी के समानार्थी मुहावरे और कहावतें सुनो और उनका द्‌विभाषी लघुकोश बनाओ :
जैसे- अधजल गगरी छलकत जाए = उथळ पाण्याला खळखळाट फार.

अँधेरी रात थी । चारों ओर सन्नाटा था । हाथ फैलाए न सूझता था । कभी-कभी कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनाई पड़ती थी । आधी रात बीत चुकी थी । मामा जी के घर से कुछ दूरी पर सामने हवेली थी । हवेली में उजाला था । आर्यन खेतों को सरपट पार करता हुआ उस ओर अकेले बढ़ रहा था । उस हवेली में आधी रात के बाद कल भी ऐसा ही उजाला देखा था। मामा जी ने पहले ही आर्यन से कह दिया था, 'उधर हवेली की ओर जाने की जरूरत नहीं है ।' वह हवेली भूतों का डेरा है। आर्यन मन-ही-मन मुसकाने लगा । वह जानता था कि भूत-वूत कुछ नहीं होते । यह कपोल कल्पना है । कक्षा में विज्ञान के शिक्षक ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण अच्छी तरह समझाया था । रहस्य का पता लगाने के लिए उसने मन में ठान लिया ।

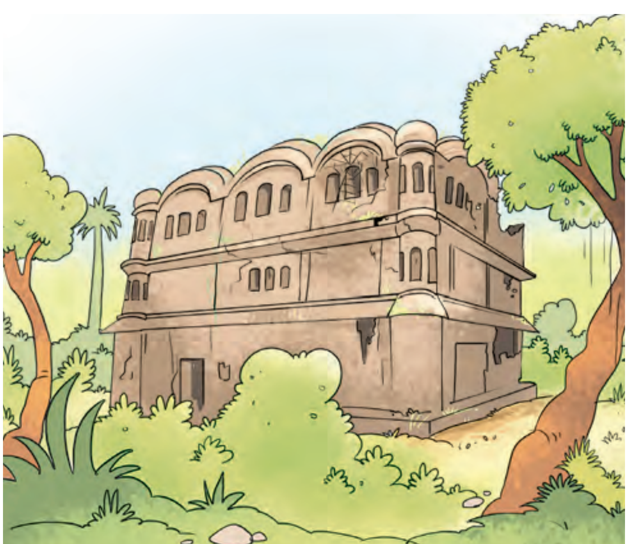

मामा जी ने कहा था, 'इस हवेली में पिछले दस-पंद्रह सालों से कोई नहीं रहता । पहले उसमें एक जमींदार का परिवार रहता था । अब जमींदार का परिवार खत्म हो गया है । उस तरफ कोई आता-जाता नहीं । एक बार घीसू उधर गया था । बेचारे का बुरा हाल हुआ था । तीन महीने तक खाट पकड़े रहा ।'

आर्यन करवटें बदलता रहा । आधी रात को उठकर छत से उसने हवेली को फिर से देखा । वहाँ रोशनी थी । गरमी की छुट्टियाँ बिताने के लिए वह मामा जी के घर आया था । यह एक समृद्‌ध गाँव है । मामा जी के पास एक विदेशी डिजिटल कैमरा भी है, यह बात आर्यन को मालूम थी । मामा जी की एक लड़की थी । उसका नाम था कनिष्का। आर्यन ने कनिष्का से कुछ सलाह-मशविरा किया । दोनों बहादुर थे । अगला कदम उठाने के लिए उन्होंने कमर कस ली ।

अगली सुबह उसने मामा जी से कैमरा माँग लिया । मामी जी को साथ बैठाकर मामा जी का फोटो लिया । फिर मामा-मामी और कनिष्का के भी फोटो खींचे । कनिष्का ने मामा-मामी के साथ आर्यन के भी फोटो खींचे । मामा-मामी जी बहुत खुश थे । मामा जी ने कैमरे की तारीफ के पुल बाँधते हुए कहा, ''रात में,

❑ कहानी के किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से कहानी के प्रमुख मुद्दे बताने के लिए कहें । कहानी अपने शब्दों में कहने के लिए प्रोत्साहित करें । ब्लॉग से किसी कहानी का वाचन कराएँ ।

बताओ तो सही

अंधश्रद्‌धा निर्मूलन संबंधी स्वयं किए हुए कार्य बताओ ।

(घर में) (विद्‌यालय में) (परिवेश में)

मामूली रोशनी में, बिना फ्लैशगन के भी यह तसवीर खींच लेता है । कमाल का लैंस लगा है इसमें ।'' आर्यन ने कैमरा अपने पास रख लिया था । कैमरा पाकर आर्यन और कनिष्का बहुत प्रसन्न थे । वे दोनों रात होने का इंतजार करने लगे। रहस्य का पता लगाने का यह अच्छा अवसर था ।

अँधेरा होते ही दोनों घर से निकल पड़े । हवेली सामने थी । अंदर से हँसी और कहकहों की आवाजें सुनाई पड़ रही थीं । आर्यन और कनिष्का ने पहले चारों ओर ध्यान से देखे । कहीं कोई खतरा नहीं था । वे दबे पाँव हवेली में चले गए । बीचोबीच एक बड़ा कमरा था । उसका दरवाजा अंदर से बंद था । खिड़कियाँ नीचे से बंद थीं लेकिन ऊपर से खुली थीं ।

बड़ी सावधानी से आर्यन ने अंदर झाँककर देखा । हट्‌टे-कट्‌टे, मोटे-तगड़े, बड़ी-बड़ी मूँछोंवाले कई लोग पगड़ी बाँधे बैठे थे । उनके साथ कमीज और पैंट पहने हुए भी कुछ लोग थे । उनकी आँखों से आग बरस रही थी । आँखें लाल-लाल थीं । सबके चेहरे डरावने थे । उस समय वे खाने में मस्त थे । कोई हड्‌डी चबा रहा था तो कोई रोटियाँ तोड़-तोड़कर मुँह में डाल रहा था । आर्यन ने उन्हें ध्यान से देखा । उनके गले में कारतूसों की पेटी लटक रही थी । बंदूकें और तलवारें भी रखी थीं । कुछ लोग लुढ़के हुए पड़े थे ।

आर्यन ने इशारा किया । कनिष्का ने बड़ी सावधानी से कैमरा निकाला । गैस बत्तियों की रोशनी इतनी तेज थी कि बड़ी आसानी से फोटो लिया जा सकता था । बस, उसने फटाफट कई फोटो खींचे और वे घर की ओर चल पड़े । अगले दिन सवेरे-सवेरे आर्यन ने साइकिल उठाई और नारायणपुर की ओर चल पड़ा । वहाँ फोटोग्राफर की एक दुकान थी । सभी फोटो तैयार कराकर शाम तक वह लौट आया ।

कनिष्का ने अपने पिता जी से कहा, ''आप कहते हैं, भूतों के पैर उलटे होते हैं । उनकी छाया नहीं होती । उनके फोटो नहीं ले सकते लेकिन कल रात हम भूतों के डेरे पर गए थे । वहाँ कुछ फोटो लिए हैं । जरा देखिए तो !'' उन्होंने फोटो पिता जी को दे दिए ।

वे परेशान हो उठे । उन्हें ऐसा खतरनाक काम पसंद न था । फोटो देखकर उनकी आँखें खुली की खुली रहीं । बोले, ''तो क्या भूत इनसानों जैसे होते हैं ?''

''इनसानों जैसे नहीं । इनसान ही भूत हैं । देखिए न ! इनके पैर सीधे हैं, इनकी छाया भी है और इनका फोटो भी आ गया । असल में भूत-वूत की अफवाह हैं । कोई हवेली की तरफ न जाए, उनका रहस्य न खुले इसीलिए उन्होंने भूत होने की अफवाह फैलाई है । यदि लोगों का आना-जाना रहता तो ये लोग वहाँ अपना क्रिया-कलाप कैसे चलाते ?'' फिर कुछ रुककर बोला, ''आप मेरे साथ थाने चलेंगे ? मुझे इस मामले में बहुत गड़बड़ लगती है'', आर्यन ने कहा ।

❑ विद्‌यार्थियों से कहानी पर आधारित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्ननिर्मिति कराएँ । उन्हें बनाए गए प्रश्नों के उत्तर एक-दूसरे से पूछने के लिए प्रेरित करें । उन्हें विज्ञान प्रश्नमंच में सहभागी होने के लिए कहें । प्रश्ननिर्मिति की स्पर्धा का आयोजन करें ।

विचार मंथन

।। श्रद्‌धा और विज्ञान, जीवन के दो पक्ष महान ।।

थानेदार ने फोटो देखते ही कहा, ‘‘इन डाकुओं के गिरोह ने कई वर्षों से बहुत ही उत्पात मचा रखा है । डकैती- राहजनी इनका पेशा है । कई वर्षों से इनकी तलाश की जा रही है । इनको पकड़ने के लिए पुलिस ने अपना खून-पसीना एक कर दिया था । शाबाश ! तुम दोनों ने बहुत ही बहादुरी का काम किया है । कहाँ हैं ये ?’’ ‘‘आप तैयारी कीजिए, ठिकाना मैं बताता हूँ ।’’ आर्यन ने कहा ।

उस रात भूतों के डेरे पर पुलिस ने छापा मारा । दोनों ओर से गोलियाँ चलीं । सवेरा होते-होते डाकुओं ने हथियार डाल दिए । उनके कुछ साथी मारे गए और कुछ पकड़े गए । गाँववालों ने हवेली में बसे भूतों को देखा तो चकित रह गए । सभी डाकुओं के आतंक से मुक्त हो गए । जिला कलेक्टर ने आर्यन और कनिष्का की बहादुरी के कारण उनके नाम राष्ट्रपति कार्यालय को

भेजवा दिया । आने वाले गणतंत्र दिवस पर महामहिम राष्ट्रपति के हाथों उनको ‘वीरता पुरस्कार’ से सम्मानित किया जाने वाला है ।

मैंने समझा

वाचन जगत से

टिप्पणी बनाने हेतु समाचार पत्र से बहादुरी के किस्से पढ़ो और संकलन करो ।

शब्द वाटिका

नए शब्द

सन्नाटा = नीरव शांति
सलाह-मशविरा = परामर्श
बीचोबीच = मध्यभाग में
उत्पात = ऊधम, उपद्रव
डकैती = लूट-पाट
राहजनी = रास्ते में लूट-पाट
आतंक = दहशत,भय

मुहावरे

खाट पकड़ना = बीमार होना
करवटें बदलना = बेचैन रहना
कमर कसना = दृढ़ संकल्प करना
तारीफ के पुल बाँधना = प्रशंसा करना
आँखें खुली की खुली रहना = चकित रह जाना
खून पसीना एक करना = कड़ी मेहनत करना
हथियार डालना = आत्मसमर्पण करना

❑ कहानी में आए वर्तमानकाल के किसी एक वाक्य का चुनाव कराके उसे भूतकाल एवं भविष्यकाल में परिवर्तित कराएँ । इसी तरह एक काल से अन्य कालों में वाक्य परिवर्तन का अभ्यास कराएँ । तीनों कालों की क्रिया रूपों पर चर्चा करके परिवर्तन कराएँ ।

सुनो तो जरा

पाठों में आए हुए मूल्यों को सुनो, तालिका बनाओ और सुनाओ ।

सदैव ध्यान में रखो

बड़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिए ।

१. जोड़ियाँ मिलाओ :

(अ)	(ब)
(क) फोटो की दुकान	कपोल कल्पना
(ख) भूत-वूत	कहकहों की आवाज
(ग) हवेली	खतरनाक काम
	नारायणपुर

२. आर्यन और कनिष्का द्‌वारा देखी हुई हवेली का वर्णन अपने शब्दों में लिखो ।

३. कनिष्का और आर्यन को 'वीरता पुरस्कार' घोषित होने का कारण बताओ ।

४. इस कहानी की किसी घटना को संवाद रूप में प्रस्तुत करो ।

भाषा की ओर

चित्र के आधार पर सभी कारकों का प्रयोग करके वाक्य लिखो :

L547RD

१. मछुआरे ने जाल फेंका ।

२. ------------------------------

३. ------------------------------

४. ------------------------------

५. ------------------------------

६. ------------------------------

७. ------------------------------

८. ------------------------------